अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 8 जून 2019

दुनिया की सबसे खूबसूरत चीजों को देखा या छुआ नहीं जा सकता, उन्हें बस दिल से महसूस किया जा सकता है...
हेलन केलर, अमेरिकी लेखिका

रिजर्व बैंक ने इस साल तीसरी बार रेपो रेट में कमी कर अर्थव्यवस्था को गति देने की कोशिश की है, पर अभी तक बाजार को इसका पूरा लाभ नहीं मिला है।

सस्ते कर्ज का लाभ

रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति द्वारा सर्वसम्मति से रेपो रेट में 0.25 फीसदी की कटौती करना, जो चार महीने में की गई लगातार तीसरी कटौती है, और मौद्रिक नीति के रुख को 'तटस्थ' से 'समायोजित' करना बताता है कि वह अर्थव्यवस्था की स्थिति से चिंतित है और इसे रफ्तार देना चाहती है। 5.75 फीसदी पर बैंकों की ब्याज दर अब विगत नौ साल में सबसे कम है। ऐसे ही डिजिटल पेमेंट को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय बैंक ने एनईएफटी और आरटीजीएस के जरिये ऑनलाइन पैसे ट्रांसफर करने का शुल्क खत्म कर दिया है, और एटीएम शुल्क घटाने के लिए समिति गठित करने की बात कही है। हाउसिंग और ऑटोमोबाइल क्षेत्र में मांग बढ़ाने की कोशिश करने के साथ-साथ रिजर्व बैंक ने आम आदमी को राहत पहुंचाने के बारे में सोचा है, तो इसे समझा जा सकता है। दरअसल अर्थव्यवस्था की हालत बहुत अच्छी नहीं है। आर्थिक विकास दर 5.8 फीसदी के साथ पांच साल के न्यूनतम स्तर पर है, तो बेरोजगारी की दर (6.1) पैंतालिस साल के उच्चतम स्तर पर है। मांग घटने से उद्योग क्षेत्र में उत्पादन कम रह गया है, ट्रेड वॉर के कारण निर्यात सुस्त हैं, निवेश के क्षेत्र में सुस्ती है, तो कृषि क्षेत्र न केवल बदहाल है, बल्कि कमजोर मानसून से भी चिंता बढ़ी है। इसी कारण केंद्रीय बैंक ने 2019-20 की अनुमानित विकास दर 7.2 से घटाकर सात फीसदी कर दी है। जहां तक बाजार को गति मिलने की बात है, तो इस साल इससे पहले रेपो रेट में की गई दो कटौतियों का पूरा लाभ ग्राहकों को नहीं मिला है, क्योंकि बैंक खुद एनपीए समेत दूसरी समस्याओं का सामना कर रहे हैं- हालांकि इस कटौती के बाद उपभोक्ताओं को कुछ राहत मिलने की उम्मीद है, जिससे ईएमआई में कुछ कमी आ सकती है। गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के लिए राहत की घोषणा न होने से भी निवेशकों में निराशा फैली, जिससे शेयर बाजार टूट गया,

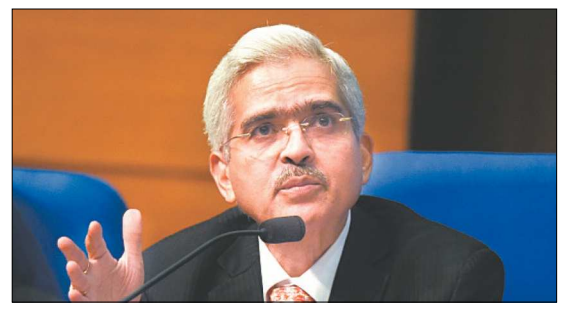

क्योंकि डीएचएफएल समेत कई गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को तत्काल आर्थिक मदद की जरूरत है। रिजर्व बैंक ने हालांकि आगे भी रेपो रेट में कमी करने का संकेत दिया है, लेकिन मौजूदा स्थिति में ऐसे प्रतीकात्मक कदमों के बजाय सरकार की ओर से ठोस हस्तक्षेप संभवतः ज्यादा कारगर होगा। उम्मीद करनी चाहिए कि अगले महीने पेश होने वाले बजट में सरकार इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाएगी।

क्या कांग्रेस इच्छा मृत्यु से पीड़ित है

राहुल को अपने इस्तीफे की पेशकश पर अडिग रहना चाहिए, इसने उनका कद बढ़ाकर एक ऐसे नेता के रूप में पेश किया है, जिनके लिए अपने हित से ज्यादा महत्वपूर्ण पार्टी हित है। शास्त्री और राव, दोनों ही महान प्रधानमंत्री साबित हुए, हालांकि वे गांधी-नेहरू परिवार से नहीं थे।

पिछले हफ्ते कांग्रेस संसदीय दल (सीपीपी) की बैठक में सोनिया और राहुल गांधी की टिप्पणियों ने मुझे अपने पहले के आकलन को सुधारने के लिए बाध्य किया है। अब मुझे लग रहा है कि कांग्रेस इच्छा मृत्यु के लक्षणों को प्रकट कर रही है!

बेशक राहुल ने निर्भीक, निडर और अनथक तरीके से प्रचार किया और कुछ ऐसे मुद्दे उठाए, जिसके बारे में उन्हें लगता था कि वे मतदाताओं के दिलोदिमाग को आंदोलित करते हैं जैसे-भारत और राष्ट्रीय संस्थानों पर हमला, सांप्रदायिक विभाजन और असहिष्णुता, गायों पर निगरानी और भीड़ हत्या, नोटबंदी के दुष्प्रभाव, जीएसटी का गलत तरीके से क्रियान्वयन, अर्थव्यवस्था का लचर प्रदर्शन, बेरोजगारी और किसानों के संकट में वृद्धि, राफेल सौदे में अनिल अंबानी को मोदी का उपहार इत्यादि। दुर्भाग्य से उनका सबसे उत्तम प्रयास भी मोदी को हराने के लिए पर्याप्त नहीं था, जिन्होंने कांग्रेस को करारी मात दी। राहुल को वही करना चाहिए, जो उन्होंने अपनी पार्टी के चुने हुए सदस्यों को करने की सलाह दी है कि 'आत्मनिरीक्षण करें, और समझने की कोशिश करें कि क्या गलत हुआ और पार्टी का कायाकल्प करने की कोशिश करें।'

सुरेंद्र कुमार
पूर्व राजदूत

यदि वह ऐसा करते हैं, तो निम्नांकित विचार उनके दिमाग में आ सकते हैं-पहला, उनका जोरदार संदेश मतदाताओं को प्रभावित नहीं कर पाया। क्यों, क्या उनका संदेश गलत था? या संदेशवाहक ने खुद को उसके लिए तैयार नहीं किया? उन्होंने जितने मुद्दे उठाए, उनमें से अधिकांश प्रासंगिक थे, लेकिन उन मुद्दों के बारे में लोगों में नकारात्मकता उतनी नहीं थी, जितना वह बता रहे थे। उन्होंने मोदी पर सामने से वार किया-चौकीदार चोर है। इस नारे ने उन्हें अरविंद केजरीवाल का कैरीकेचर बना दिया। कई लोगों ने इसे उस व्यक्ति के लिए अनुपयुक्त बताया, जो एक दिन खुद प्रधानमंत्री बनना चाहता है। दूसरा, सभी जनमत सर्वेक्षणों ने संकेत दिया था कि

मोदी किसी भी भारतीय राजनेता से ऊपर हैं। इसलिए तीन बार गुजरात के मुख्यमंत्री और एक बार भारत के प्रधानमंत्री की तुलना में राहुल हल्के दिखने के लिए बाध्य थे, खासकर तब, जब उनकी प्रशासनिक और शासकीय क्षमता अब भी अप्रमाणित है और वह कई विपक्षी दलों के लिए स्वीकार्य नहीं हैं। अपने असंतोष के बावजूद मतदाताओं ने विश्वसनीय विकल्प के रूप में न उभर सकने वाले किसी दूसरे नेता की तुलना में मोदी को दूसरा मौका देने के लिए चुना। उन्होंने दूसरी पारी में अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मोदी पर भरोसा जताया।

तीसरा, मुद्दों का अति सरलीकरण कभी-कभी उपहास का कारण बनता है। कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में उन्होंने याद दिलाया कि कांग्रेस ने किस तरह से अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी थी, मगर उसका मौजूदा संदर्भ में कोई अर्थ नहीं। चौथा, मोदी की जनहितैषी योजनाओं की प्रभावकारिता पर सवाल उठाना समझ में आता है, लेकिन यह कहना कि उसका कोई असर नहीं पड़ा, मूर्खतापूर्ण है। भले ही उनका कार्यान्वयन सही नहीं था और कई जरूरी चीजें छोड़ दी गईं, लेकिन इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि स्वच्छ भारत अभियान, जन धन योजना, सौभाग्य, उज्ज्वला, आयुष्मान भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, किसान सम्मान आदि योजनाओं के लाखों लाभार्थी हैं, जिनकी नजर में मोदी उनकी देखभाल करता था, उनके जीवन को बदलने की कोशिश करता था और सत्ता में दोबारा आने पर भविष्य में और भी कुछ कर सकता है।

पांचवां, हालांकि कांग्रेस की न्याय योजना बहुत अच्छी थी, लेकिन इसका सीमित प्रभाव पड़ा, क्योंकि लोगों ने इसके प्रभाव को समझा ही नहीं और जिन्होंने इसे समझा, उन्होंने इसे मोदी की किसान सम्मान योजना के मुकाबले के लिए लाई गई योजना के रूप में खारिज कर दिया। छठा, एक्जिट पोल के नतीजे आने से पहले ही आम धारणा थी कि भाजपा संभवतः सत्ता में दोबारा लौट सकती है। सहयोगी दलों के साथ कांग्रेस द्वारा नई सरकार बनाने की संभावना कांग्रेस के चापलूस और समर्थकों द्वारा व्यक्त की गई थी, जिन्होंने कभी लोगों को जमीनी वास्तविकता नहीं बताई। राजनीति में कभी पूर्ण विराम नहीं होता है। सब कुछ खत्म नहीं होता है। इंदिरा गांधी को 1971 में दुर्गा कहा गया था, लेकिन 1977 में उनकी शर्मनाक पराजय हुई थी, मगर फिर 1982 में वह लौटी थीं। राहुल भी अपनी बिखरी हुई पार्टी को एकजुट कर सकते हैं और फिर बेहतर योजना, बेहतर रणनीति,बेहतर तैयारी और ऊर्जा के साथ लड़ सकते हैं और कांग्रेस के समर्पित, ऊर्जावान, जीत के लिए दृढ़ संकल्पित कार्यकर्ताओं को प्रेरित कर सकते हैं। राहुल को अपने इस्तीफे की पेशकश पर अडिग रहना चाहिए, इसने उनका कद बढ़ा दिया और एक ऐसे नेता के रूप में पेश किया है, जिनके लिए अपने हित से ज्यादा महत्वपूर्ण पार्टी हित है। लाल बहादुर शास्त्री और नरसिंह राव, दोनों ही महान प्रधानमंत्री साबित हुए, हालांकि वे गांधी-नेहरू परिवार से नहीं थे।

राहुल को अपने चमचों और अपने पिता के मित्रों से छुटकारा पाना चाहिए, जो उन्हें वास्तविकता देखने से रोकते हैं। हो सकता है कि कभी उन्होंने उपलब्धि हासिल की हो पर वे आज की भारतीय राजनीति को बहुत कम जानते हैं। राहुल को मोदी की समानता करने में समय नहीं गंवाना चाहिए। उन्हें वांछित नतीजे पाने के लिए अगले पांच वर्षों के दौरान ब्लॉक और जिला स्तर पर पार्टी इकाइयों का गठन करना चाहिए।

राजनीति में धारणा और विश्वसनीयता सबसे ज्यादा मायने रखती हैं। जब तक राहुल चुनौती स्वीकार नहीं करते और स्मृति ईरानी से अमेठी वापस नहीं छीनते, तब तक उन्हें कोई गंभीरता से नहीं लेगा। और जब तक उत्तर प्रदेश विधानसभा में कांग्रेस सम्मानजनक सीटें नहीं जीतती, तब उसे भाजपा का विकल्प नहीं माना जाएगा। राहुल को अमेठी से अपनी रथ यात्रा शुरू करनी चाहिए और उत्तर प्रदेश होते हुए जिन राज्यों में चुनाव होंगे, वहां से गुजरना चाहिए तथा रास्ते में लोगों का समर्थन, ताकत और गति पाते हुए 2024 के चुनाव के लिए दिल्ली लौटना चाहिए। इस यात्रा की सफलता के लिए उन्हें एक अर्जुन की तलाश करनी होगी। जैसा कि स्टीव जॉब्स ने कहा है, किसी को उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए और सपने देखना बंद नहीं करना चाहिए।

...और मेरी मां ने भी हवाई सफर बंद कर दिया

अपनी कहानी
>> ग्रेटा थनबर्ग

मैंने जलवायु परिवर्तन को लेकर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक वीडियो संदेश भेजकर गंभीर कदम उठाने की मांग की, साथ ही कई देशों में अलग-अलग मंचों पर जाकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवाज उठाई।

बिजली *बल्ब बंद करने से लेकर पानी की बर्बादी रोकने और खाने को न फेंकने जैसी बातें मैं हमेशा से सुनती आई थी। जब मैंने इसकी वजह पूछी तो मुझे बताया गया कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ऐसा किया जा रहा है। अगर हम जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को रोक सकते हैं, तो हमें इसके बारे में बात करनी चाहिए। मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि लोग इसके बारे में कम ही बात करते हैं।*

ऐसे की शुरुआत

मेरा जन्म 2003 में स्टॉकहोम में हुआ, जो स्वीडन की राजधानी भी है। यह स्वीडन का सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनीतिक और आर्थिक केंद्र भी है। मेरे पिता अभिनेता, लेखक, जबकि मेरी मां ऑपेरा गायिका हैं। मैं पार्कलैंड (फ्लोरिडा) के मर्जरी स्टोनमैन डगलस हाई स्कूल के किशोर कार्यकर्ताओं से प्रेरित थी, जिन्होंने हाथियारों पर नियंत्रण को लेकर मार्च फॉर अवर लाइव्स का आयोजन किया था। नौ सितंबर, 2018 को स्वीडन के आम चुनाव तक मैंने स्कूल नहीं जाने का फैसला किया और जलवायु के लिए स्कूल की हड़ताल शुरू की। मेरी मांग थी कि स्वीडिश सरकार पेरिस समझौते के अनुसार कार्बन उत्सर्जन कम करे। मैंने जलवायु परिवर्तन को लेकर रिस्कडैग (स्वीडिश संसद) के बाहर आवाज उठाई। पहले तो किसी का ध्यान मेरी तरफ नहीं गया, और न ही कोई मेरा साथ देने आया। मेरे माता-पिता ने मुझे ऐसा करने से रोकने की कोशिश की। यहां तक कि मेरे सहपाठियों ने इसमें शामिल होने से इनकार कर दिया। लेकिन मैंने लगातार अपना अभियान जारी रखा। बाद में कुछ राहगीरों ने हाथ से पेंट किए बैनर के साथ मुझे बैठे देखा, तो आत्मीयता व्यक्त की।

फिर मिला सहयोग

हालांकि तब तक मेरे और मेरे परिवार के बीच बहुत कुछ बदल चुका था। मैंने अपने अभिभावकों को यकीन दिलाया कि, मैं सही रास्ते पर हूं। इसके बाद मेरी मां ने इस अभियान से प्रेरित होकर विमान यात्रा करना छोड़ दिया, ताकि वायु प्रदूषण में कमी लाने में आंशिक सहयोग कर सकें। मेरे पिता भी इस अभियान से प्रभावित हुए और हम तीनों ने मांसाहार भी छोड़ दिया। धीरे-धीरे मेरे साथ धरने में मेरी कक्षा के विद्यार्थी जुड़ने लगे। अंततः मेरे अभियान में वह सब जो कभी मना कर चुके थे, और उनके साथ पूरी दुनिया के स्कूली बच्चे शामिल हो गए। यह आश्चर्यजनक रहा, 125 से अधिक देशों और 700 से अधिक स्थानों पर मेरे अभियान को समर्थन मिला। विभिन्न देशों के लाखों स्कूली बच्चे इसका हिस्सा बन चुके हैं।

भविष्य के लिए शुक्रवार

मैंने जलवायु परिवर्तन को लेकर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक वीडियो संदेश भेजकर गंभीर कदम उठाने की मांग की, साथ ही कई देशों में अलग-अलग मंचों पर जाकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवाज उठाई। अपनी बात लोगों तक पहुंचाने के लिए मैंने ट्विटर का सहारा लिया। इसी वर्ष 15 मार्च को विश्व के कई शहरों में हमने दुनिया के विभिन्न लाखों छात्रों के साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए 'फ्राइडेज फॉर फ्यूचर' (भविष्य के लिए शुक्रवार) नाम से प्रदर्शन किए। मैं दुनिया के नेताओं से भीख नहीं मांग रही हूं। बल्कि उनको सचेत कर रही हूं कि सही समय पर कार्बन उत्सर्जन को कम करने के प्रयास नहीं किए गए तो पृथ्वी के सभी जीवों का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा।

-शांति नोबेल, 2019 के लिए नामित छात्रा के विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

फैक्ट फाइल

लॉर्ड्स क्रिकेट मैदान

>> क्रिकेट मैदान

यहां 22 जून, 1814 को पहला मैच एमसीसी बनाम हर्टफोर्डशायर के बीच खेला गया था।

1975 में इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल द्वारा शुरू किए गए क्रिकेट विश्व कप के 2019 की शृंखला का फाइनल मैच इंग्लैंड के प्रसिद्ध लॉर्ड्स के मैदान में खेला जाएगा। क्रमशः 1975, 1979, 1983, 1999 और अब 2019 के बाद लॉर्ड्स क्रिकेट मैदान के नाम विश्व कप के सबसे ज्यादा फाइनल मैच खेले जाने का रिकॉर्ड होगा। लॉर्ड्स क्रिकेट मैदान लंदन के सेंट जोन्स वुड में स्थित है। यह मैदान आमतौर पर 'होम ऑफ क्रिकेट' के नाम से भी जाना जाता है। यह मैदान 18वीं शताब्दी में थॉमस लार्ड्स द्वारा बनाया गया था। यह अभी मेरिलबोन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) के स्वामित्व में है। यहां दुनिया का सबसे पुराना और बड़ा खेल संग्रहालय मौजूद है। लॉर्ड्स क्रिकेट मैदान पर 22 जून, 1814 को पहला मैच मेरिलबोन क्रिकेट क्लब बनाम हर्टफोर्डशायर के बीच खेला गया था। आज लॉर्ड्स अपने मूल स्थान पर नहीं है, 1787 और 1814 के बीच लॉर्ड द्वारा यहां स्थापित तीन मैदानों में से यह तीसरा है। इस मैदान की दर्शक क्षमता 30,000 है। इस मैदान पर पहला टेस्ट मैच 1884 में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेला गया था। इस मैदान पर ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड के खिलाफ 1930 में 729 रन बनाए, जो यहां का सबसे बड़ा स्कोर है। लॉर्ड्स में शतक बनाने और एक पारी में पांच विकेट लेने वाले खिलाड़ियों का नाम ऑनरेरी बोर्ड पर दर्ज होता है, जो कि हर खिलाड़ी का सपना रहता है। यहां का मीडिया सेंटर सबसे खास है, जिसे 1999 में द रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रिटिश आर्किटेक्ट्स स्टर्लिंग प्राइज से नवाजा गया।

बाल विवाह से जूझता नेपाल

नेपाल में अब भी बड़ी संख्या में नाबालिग उम्र में शादियां होती हैं, पर धीरे-धीरे इसके खिलाफ जनमत बन रहा है।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए भद्रा शर्मा, काई शुल्ज

दक्षिण नेपाल के तपते मैदानी इलाके में राजेश सादा की बीमार मां की एक ही इच्छा थी : मरने से पहले वह अपने सोलह साल के बेटे की शादी देखना चाहती थीं। राजेश की दुल्हन ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। विगत मार्च में, मां की मौत से कुछ ही दिन पहले राजेश की शादी पंद्रह साल की एक ऐसी लड़की से हुई, जिसे वह नहीं जानता था। राजेश के पांचों बड़े भाई बहनों ने उसे मुबारकबाद दी। उन सबकी शादी बालिग होने से पहले ही हुई थी। 'मैं नहीं समझता कि इसमें कुछ गलत है। हमारे यहां सभी जगह इसी उम्र में शादियां होती हैं', राजेश कहते हैं।

दुनिया के अनेक हिस्सों में बाल विवाह के खिलाफ लड़ाई जीती जा चुकी है और पिछले एक दशक में बाल विवाह दर में भारी कमी आई है। इसकी बड़ी वजह दक्षिण एशिया में हुई सामाजिक प्रगति है। लेकिन नेपाल में, जो इस क्षेत्र के सबसे गरीब देशों में गिना जाता है, कहानी अलग है। कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि नेपाल के कुछ गांवों में बाल विवाह बढ़े हैं। यूनिसेफ द्वारा हाल ही में जारी किए गए आंकड़े के मुताबिक, दुनिया भर

में 76.5 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिनकी शादी बचपन में हुई थी। यूनिसेफ के मुताबिक, नेपाल में बाल विवाह का आंकड़ा सबसे अधिक है, बावजूद इसके कि वहां 1963 से ही बाल विवाह गैरकानूनी है। बीस से चौबीस साल की चालीस प्रतिशत नेपाली महिलाएं ऐसी हैं, जिनकी शादी अट्ठारह साल होते ही कर दी गई। नेपाल में किशोर दूल्हों की संख्या भी बहुत अधिक है।

हर साल नेपाल से हजारों लड़के खाड़ी देशों में काम करने के लिए जाते हैं। लेकिन बाहर जाने से पहले ही उनकी शादी कर दी जाती है। इससे लड़कियों के पिताओं को जहां राहत मिल जाती है, वहीं लड़के वालों के लिए भी यह अच्छा है, क्योंकि कामकाजी पुरुषों से रहित उनके परिवारों में नई दुल्हनें घर का काम और बुजुर्गों की देखभाल करती हैं। नेपाल सरकार बाल विवाह पर पूरी तरह रोक लगाने के बारे में सोच रही है। लेकिन कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि यह काम इतना आसान नहीं है। ग्रामीण इलाकों में अनेक निर्वाचित जनप्रतिनिधि, जो सार्वजनिक तौर पर बाल विवाह के खिलाफ बोलते हैं, अपने बच्चों की शादी बालिग होने से पहले ही कर देते हैं। गांवों में शिक्षा की दर वैसे भी बहुत कम है। तिस पर मोबाइल फोन और सोशल मीडिया के प्रसार के कारण संभावित दूल्हा-दुल्हनों की तलाश आसान हो गई है। 'लोगों की सोच बदलना कठिन है। वे नहीं समझते कि बालपन में शादी कर देना बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करना है। यह एक किस्म की हिंसा है, 'नेपाल बाल कल्याण बोर्ड' से जुड़े राम बहादुर चंद कहते हैं।

हालांकि थोड़ा-बहुत बदलाव दिखने लगा है। सरकार ने लड़कियों की शादी की उम्र दो साल बढ़ाकर बीस कर दी है। विगत जनवरी में सरकार ने उन लड़कियों को साइकिल देने और आर्थिक मदद करने की घोषणा की, जो स्कूल जाती हैं। नेपाल में वर्ष 2030 तक बाल और नाबालिग विवाह को पूरी तरह खत्म कर देने का लक्ष्य रखा गया है।

इस हफ्ते के शब्द

अनंतकृष्णा

केरल के रहने वाले 19 वर्षीय अनंतकृष्णा ने व्हाट्सऐप में आए एक बड़े बग की पहचान कर उसे दूर कर दिया। फेसबुक उन्हें हॉल ऑफ फेम में जगह देगा।

पब्लिक (PUBLIC)

नई शिक्षा नीति के मसौदे में की गई सिफारिश यदि मानी गई तो देश के निजी स्कूलों को अपने नाम से इस शब्द को हटाना पड़ सकता है।

माउंट एवरेस्ट पर कचरा

11,000 किलोग्राम

कचरा माउंट एवरेस्ट की चोटी से हटाया गया है। इससे पहले वहां ट्रैफिक जाम जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

सूत्र
>> टोनी रॉबिन्स

पैंतीस डॉलर खर्च करके पाई सफलता की राह

मैं नार्थ हॉलीवुड में बड़ा हुआ। मेरी मां मादक पदार्थों का सेवन करती थीं और हम बच्चों को शारीरिक रूप से प्रताड़ित करती थीं। बड़ा होने के कारण मुझे अपने छोटे भाई-बहनों की रक्षा करनी पड़ती थी, इसलिए व्यावहारिक रूप से मैं जरूरत से ज्यादा ही मनोवैज्ञानिक बन गया। मैंने ऐसे स्कूलों में पढ़ाई की, जो धनी परिवारों के लिए नहीं थे, लेकिन मैं उन छात्रों में से था, जो पटरी से अलग चलते थे। सत्रह साल की उम्र में मैं स्कूल की पढ़ाई के बाद चौकीदारी का काम करने लगा और सप्ताहांत में लोगों को अतिरिक्त पैसे कमाने में मदद करने लगा। एक बार मैंने अपने मकान मालिक से पूछा, मेरे पिता कह रहे थे कि आप एक समय विफल थे, फिर इतने सफल कैसे हो गए? उन्होंने बताया कि उनके जीवन में बदलाव तब आया, जब वह जिम रॉन के सेमिनार में जाने लगे। जिम रॉन लोगों को अपने व्याख्यान से सफल होने के लिए प्रेरित करते थे और उन्हें सफलता के नुस्खे बताते थे। मैंने अपने मकान मालिक से पूछा कि क्या वह अगले सेमिनार में मुझे मुफ्त में ले जा सकते हैं, तो उन्होंने कहा कि हां, ले जा सकता हूं, लेकिन वह नहीं ले गए। फिर मैंने स्वयं ही हफ्ते भर में 40 डॉलर की कमाई की और 35 डॉलर में

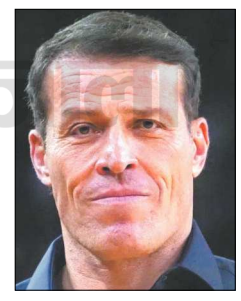

सेमिनार का टिकट खरीदकर उसमें शामिल हुआ। उन्हें सुनकर मैं मंत्रमुग्ध हो उठा। वहीं से मेरा खेल शुरू हुआ। जब मैं रॉन से मिला, तो वह स्टैंडर्ड ऑयल में कर्मचारियों और अधिकारियों के बीच व्यक्तित्व विकास के विषय पर भाषण दे रहे थे। मुझे उनका दृष्टिकोण शानदार लगा और वह उसी ऊंचाई पर थे, जहां मैं अपने जीवन में पहुंचना चाहता था। मैंने उनके साथ काम करने के लिए संपर्क किया और शीघ्र ही उनका दिल जीत लिया। रॉन जिस तरह भाषण देते थे, उससे भी ज्यादा ऊर्जा के साथ तथा कक्षा में पढ़े व्यावहारिक मनोविज्ञान की बातों का समावेश करके मैं भाषण देने लगा। मैंने उत्तर अमेरिका में सैकड़ों सेमिनार करके अपनी वक्तृत्व कला को और निखारा और 26 की उम्र होते-होते न केवल मैं लखपति बन गया, बल्कि मेरे पास अपनी एक बेस्टसेलर किताब भी थी। फिर तो यह सिलसिला ही चल निकला। मेरे गुरु जिम रॉन ने मुझे सिखाया कि जीवन को आसान बनाने की कोशिश करने से अच्छा है, खुद को और बेहतर बनाना। वास्तव में उन्होंने मेरे जीवन को आकार दिया। मेरा मानना है कि कोई भी लक्ष्य बनाना अपनी कल्पना को हकीकत में बदलने के लिए पहला कदम है।

सफलता के लिए अपने फैसलों के प्रति प्रतिबद्ध और अपने तरीकों को लेकर हमेशा लचीला रहना चाहिए।